दिनांक–13.02.2025

B.A. PART- III HONS (Philosophy)

दीर्घ उत्तरीय

जैन दर्शन का अनेकान्तवाद

जैन दर्शन का अनेकान्तवाद – जैन दार्शनिकों ने तत्व की प्रकृति के संबंध में अनेकान्तवाद का प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार प्रत्येक वस्तु में अनेक धर्म होते हैं। अतएव किसी भी वस्तु की विवेचना उनके अनुसार अनेक प्रकार से की जा सकती है।

संक्षेप में अनेकान्तवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु के अनेक धर्म होते हैं, अतएव किसी वस्तु के एक ही धर्म पर बल देना उपयुक्त नहीं है।

1. **स्वपर्याय तथा परपर्याय धर्म** : जैन दार्शनिकों के मतानुसार प्रत्येक वस्तु के धर्मों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है–

(i) **स्वपर्याय** : स्वपर्याय का अर्थ है उस वस्तु के वे धर्म जो उस वस्तु के स्वरूप के परिचायक अंग है।

(ii) **पारपर्याय** : परपर्याय का अर्थ है उस वस्तु के वे स्वरूप, जिनसे उसका अन्य वस्तुओं से भिन्न होना अथवा विभिन्नता प्रकट होती है।

स्वपर्याय 'भावात्मक धर्म' तथा परपर्याय 'अभावात्मक धर्म' भी कहलाते हैं।

2. **काल का योग** : वस्तु के भावात्मक तथा अभावात्मक धर्म के रूपों के काल को जोड़ देने पर उस वस्तु की अनेकान्त-धर्मता में वृद्धि हो जाती है। काल के योग के कारण भी उस वस्तु के विविध धर्म समक्ष आयेंगे।

प्रत्येक वस्तु में विविध धर्म होते हैं, इस कारण कोई भी विचार निरपेक्ष नहीं माना जा सकता। इसी कारण जैन दर्शन में किसी विचार को व्यक्त करते समय शायद (स्याद) का प्रयोग किया जाता है। इसे ही स्यादवाद कहा जाता है। स्यावाद तथा अनेकान्तवाद एक ही प्रकार की व्यवस्था के परिचायक है। वस्तु के अनन्त धर्म होने पर विचारों का सापेखिक होना स्वाभाविक ही है, अतएव जैन दर्शन में सापेक्षवाद को मान्यता दी गयी है। एक समय में एक ही दृष्टिकोण द्वारा किसी वस्तु का वर्णन करना सम्भव नहीं है। अतएव प्रत्येक धर्म मत एक विशेष दृष्टिकोण से सत्य है। जिस प्रकार अन्धे हाथी को सर्वांग ज्ञात नहीं कर पाये थे, उसी प्रकार कोई भी व्यक्ति सर्वांग सत्य का दर्शन नहीं कर पाता।

प्रश्न उठता है कि क्या वस्तु का पूर्ण ज्ञान असम्भव है? जैन दार्शनिकों का कथन है कि भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से किसी चीज के समस्त धर्मों का ध्यान रखने वाला व्यक्ति ही उस चीज को जान सकता है। इस प्रकार के व्यक्ति को केवली अर्थात् 'जिन' कहा जाता है।

आलोचना : आलोचकों ने इस सिद्धांत में कुछ कमियों की ओर संकेत किया है–

1. जैन दार्शनिकों ने प्रत्येक वस्तु की 'अधीनता' पर जोर देते हुए अनेकान्तवाद प्रतिपादित किया है। तथापि एकान्तवाद के अभाव में अनेकान्तवाद का सिद्धांत अपूर्ण है।
2. यद्यपि व्यवहार में यह स्वीकार करना कठिन नहीं है कि प्रत्येक चीज में अनेक धर्म होते हैं, पर इन विविध धर्मों का वस्तु से भिन्न अपना कोई अस्तित्व नहीं है।
3. वस्तु के धर्मों की विविधता से वस्तु की एकता का नाश नहीं होता है।
4. जैन दार्शनिक एकता तथा अनेकता में सामंजस्य की स्थापना नहीं कर सके हैं।
5. संसार की समस्त वस्तुयें एक-दूसरे से भिन्न होते हुए भी एक सार्वभौम सत्ता का अंग हैं। पर जैन दर्शन में इस प्रकार की किसी सार्वभौम पूर्ण सत्ता को मान्यता प्रदान नहीं की गयी है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com